मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50 वार्षिक ₹ 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 19, अंक 6

nbt.india

जून 2014

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

फ्रांस को 'रोल ऑफ ऑनर'	2
पेरांबलूर पुस्तक मेला	3
कुरुक्षेत्र में शिक्षा शिविर	3
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय	4
चेन्नई में पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	5
कन्याकुमारी में हिंदी सम्मेलन एवं कार्यशाला	5
गोवा में प्रयोजनमूलक राजभाषा कार्यशाला	5
पुस्तक परिचय	6
प्रतिलिप्यधिकार पर संगोष्ठी	7
सिंधी सलाहकार समिति की बैठक	7
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास पुस्तक विक्रय केंद्र सह पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र	8
गृह कैडर में वापसी	8

नवीनतम प्रकाशन

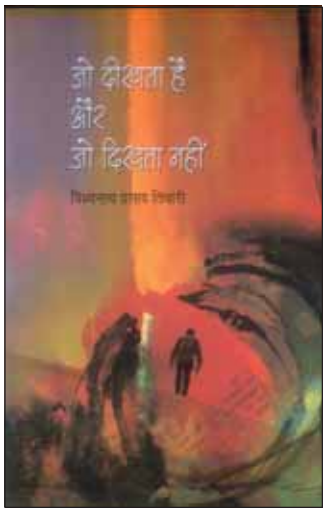

जो दीखता है और जो दिखता नहीं

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

पृ. 172 ₹ 220

ISBN 978-81-237-7140-3

चेन्नई पुस्तक महोत्सव

दस दिवसीय चेन्नई पुस्तक महोत्सव 'चेन्नई पुथागा संगमम' का 18 से 27 अप्रैल, 2014 तक चेन्नई के वाईएमसीए ग्राउंड्स, रोयापेटा में आयोजन संपन्न हुआ। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने महोत्सव का आयोजन पेरियार सेल्फ रेस्पेक्ट प्रोपेगेंडा इंस्टीट्यूशन के सहयोग से किया।

महोत्सव का उद्घाटन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर ने किया। उद्घाटन से पूर्व, प्रेस से मुलाकात के दौरान डॉ. सिकंदर, श्री एस. राजारथिनम, कर सलाहकार तथा श्री वी. अनबुराज, एसआरपीआई के अध्यक्ष, ने अपने-अपने विचार साझा किए।

प्रेस से मुलाकात में डॉ. एम.ए. सिकंदर ने न्यास द्वारा पुस्तक प्रोन्नयन एवं पठन आदत के विकास के लिए की जाने वाली गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा, ''राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत के हर क्षेत्र के संगठनों एवं संस्थाओं के साथ मिलकर, न केवल बड़े शहरों बल्कि छोटे शहरों में भी, पुस्तक मेलों का आयोजन करता है। हाल ही में ऐसे ही पुस्तक मेलों के रामनाथपुरम, कन्याकुमारी एवं पेरांबलूर में आयोजन किये गए। इन पुस्तक मेलों और प्रदर्शनियों में पुस्तक-प्रेमियों के प्रतिभाव को देखकर हम निश्चिंत हो सकते हैं कि हमारे देश में सभी आयु वर्ग में पुस्तक पठन आदत लोकप्रिय है। दुनियाभर के अनेक प्रकाशनगृह अपने प्रकाशन कार्य, अंशतः ही सही, भारत से करते हैं। आज, भारत प्रकाशन उद्योग के क्षेत्र में एक बड़े 'खिलाड़ी' के रूप में उभर रहा है और इस क्षेत्र में युवाओं के लिए रोजगार के भरपूर अवसर हैं। प्रतिभाशाली व्यावसायिकों के एक समूह के सृजन की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास स्वतंत्र रूप से, अपने स्तर पर एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों के सहयोग से पुस्तक प्रकाशन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।''

उद्घाटन-सत्र की अध्यक्षता श्री एस. राजारथिनम ने की। श्री वी. अनबुराज ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया। इससे पूर्व, बुद्धा ट्रूप ने परंपरागत संगीत प्रदर्शन 'पराई इसाई' प्रस्तुत किया। प्रो. एम. नन्नन ने 'क्या पढ़ें' इस विषय पर संबोधन किए।

पूरे महोत्सव भर अनेकानेक सांस्कृतिक कार्यक्रम, विमर्श, नाटक, लोक प्रदर्शन तथा विद्वत्जनों के संबोधन होते रहे। कार्यक्रमों में प्रख्यात लेखकों, कवियों, पत्रकारों आदि ने भाग लिया। सआदत हसन मंटो की कहानी पर

आधारित श्रीजिथ सुंदरम द्वारा निर्देशित नाटक 'अवमानम' का मंचन भी किया गया। अन्य प्रस्तुतियों में शामिल थे–बूपालम समूह, पुदुच्चेरी द्वारा एक हास्य प्रस्तुति, एम. कलाइवानन एवं उनके समूह द्वारा बोम्मालाट्टम, श्री पन्नीरसेलवम द्वारा तमिलीसाई, सुहा पावलन द्वारा वायलिन प्रस्तुति तथा थेनराल कला समूह द्वारा लोक प्रदर्शन।

कवि अरिवुमाथी, कलाकार ड्रॉट्स्की मरुदु, लेखक एस. रामकृष्णन, अभिनेता इलावारासन, कवि मनुष्यापुथिरन, कवि नेल्लज जयंत उन चुनिंदा शख्सियतों में थे जिन्होंने अपने संबोधन किए। दुर्लभ सामग्री के संग्रह एवं संरक्षण के क्षेत्र में महती योगदान के लिए कुछ व्यक्तियों को सम्मानित भी किया गया। सम्मानित होने वाले शख्सियत थे–श्री पी. श्रीनिवासन, साहित्यिक पत्रिकाओं के संग्रहकर्ता; श्री टी.एम. सरवनन एवं शणमुगावेल, मुद्राशास्त्री।

23 अप्रैल को विश्व पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस होने के दृष्टिगत खरीदारों को न्यास की पुस्तकों पर 15 प्रतिशत की छूट दी गई। उसी दिन, मरीना बीच लेबर स्टैचू से गाँधी स्टैचू तक दौड़ (वाकाथन) का आयोजन भी किया गया। इस दौड़ का उद्देश्य पुस्तक पढ़ने के प्रति जनजागरूकता लाना था, जिसमें हजारों छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस महोत्सव की मुख्य विशेषता थी कि एक अलग स्टॉल पर कुछ चुनिंदा पुस्तकों पर 50 प्रतिशत की छूट दी गई। इस स्टॉल का प्रबंधन आयोजनकर्ताओं द्वारा किया गया जहाँ प्रकाशकों ने अपनी सूची में से कुछ चुनिंदा पुस्तकें भेजी थीं। महोत्सव की दूसरी विशेषता थी पुस्तक दान अभियान। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी निजी पुस्तकें दान में दीं। इन पुस्तकों को राज्य के ग्रामीण स्कूलों को भेजा जाना था। दानदाताओं को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें कूपन दिये गए जिससे कि नई पुस्तकों की खरीद में उन्हें विशेष छूट का लाभ मिल सके।

2013 में यहाँ पहली बार आयोजित पुस्तक महोत्सव को जबरदस्त प्रतिभाव मिला था। उस समय सौ से अधिक प्रकाशक आए थे। इस बार के महोत्सव में 200 से अधिक प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता आए, जिन्हें तीन भागों में बाँटा गया था–अँग्रेजी भाषा के प्रकाशक, तमिल भाषा के प्रकाशक तथा बाल साहित्य के प्रकाशक। इस महोत्सव के साथ-साथ ही रा.पु. न्यास ने पुस्तक प्रकाशन में एक सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम भी आयोजित किया। इस महोत्सव में चेन्नई के अलावा आस-पास के जिलों के लोग भी आए।

इस पुस्तक महोत्सव का समन्वय न्यास में तमिल भाषा के संपादक श्री टी. मदन राज ने किया।

फ्रांस को 'रोल ऑफ ऑनर'

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला के अतिथि देश को 'रोल ऑफ ऑनर' प्रदान करने की परंपरा के दृष्टिगत नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2013 के अतिथि देश, फ्रांस को रा.पु. न्यास के अध्यक्ष श्री ए. सेतुमाधवन द्वारा 'रोल ऑफ ऑनर' सम्मान प्रदान किया गया। भारत में फ्रांस के राजदूत महामहिम श्री फ्रांकोइस रिशियर ने फ्रांस की ओर से यह सम्मान प्राप्त किया।

वर्ष 2014 के लिए अतिथि देश को दिए जाने वाला यह सम्मान पोलैंड को प्रदान किया गया था।

पाठक मंच बुलेटिन

(बच्चों की द्विभाषी पत्रिका)

वार्षिक शुल्क : ₹ 100-00

पत्रिका मँगवाने के लिए लिखें :

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया

फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

पेरांबलूर पुस्तक मेला

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत ने 'बापासी' (BAPASI), पेरांबलूर जिला प्रशासन, पेरांबलूर पीपुल्स कल्चरल एसोसिएशन तथा धनलक्ष्मी श्रीनिवासन ट्रस्ट के सहयोग से 31 जनवरी से 8 फरवरी, 2014 तक पेरांबलूर पुस्तक मेला का आयोजन किया। पुस्तक मेला का उद्घाटन तंजौर तमिल यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. एम. थिरूमलाई ने किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता जिला कलक्टर डॉ. तारेस अहमद (आईएएस) ने की। इस अवसर पर डीएसपी श्रीमती सोनल चंद्रा तथा उप जिलाधीश श्री मधुसूदन रेड्डी भी उपस्थित थे। श्री सुकी शिवम एवं श्री इरयन्बु (आईएएस) उद्घाटन सत्र के मुख्या वक्ता थे।

इस दस दिवसीय पुस्तक मेला में अनेकानेक साहित्यिक कार्यक्रम, विमर्श, कवि गोष्ठी, पुस्तक लोकार्पण एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन हुए जिनमें प्रख्यात लेखक, कलाकार, फिल्मी शख्सियत, कार्यकर्ता, राजनीतिक नेता एवं छात्रों आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम में वक्तागण इस प्रकार थे : डॉ. एन. कलैसेल्वी, वैज्ञानिक सीईसीआरआई; श्री स्टालिन गणशेखरन, अध्यक्ष-मक्कल सिंथानाई पेरावई; नंदलाला, प्रख्यात कवि; साहित्य अकादेमी विजेता श्री जो डी'क्रूज, श्री पोन्नीलन, श्री सू. वेंकटेशन; श्री के. गणसंबंदन, प्रख्यात वक्ता; श्री नेल्सन जेवियर, पत्रकार; श्री एम.पी. विजयकुमार आईएएस; प्रो. विजयासुंदरी, धनलक्ष्मी कॉलेज; श्री थमिरा एवं श्री राम, फिल्म निर्देशक; श्री बदरी शेषाद्रि, किजक्कु पथिपगम; प्रख्यात तमिल लेखक श्री तमिलसेल्वन, श्री अझैगिया पेरियावन, कनमणि गणशेखरन, बावा सेलादुरई, श्री लक्ष्मण पेरुमल, एस. रामकृष्णन; परवीन सुल्ताना, प्रख्यात वक्ता; ड्रॉट्स्की मरुधु एवं पुगाझेंडी, कलाकार; लीना थमिझवानन, संपादक, कलकंडु। इस अवसर पर कॉलेज के छात्रों एवं दक्षिण क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र के कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। इसके अंतर्गत परैयट्टम, संगीत, स्वाँग आदि प्रस्तुतियाँ हुईं।

सौ से अधिक प्रकाशकों एवं पुस्तक विक्रेताओं ने पुस्तक मेले में अपनी पुस्तकों का प्रदर्शन किया। खरीदारों को प्रोत्साहित करने के लिए दैनिक लकी ड्रॉ निकाले गए तथा तीन विजेताओं को क्रमशः ₹ 500, ₹ 300 तथा ₹ 200 के उपहार कूपन दिये गए।

इसके अतिरिक्त, विश्व प्रसिद्ध फिल्मों एवं महत्वपूर्ण डॉक्यूमेंटरी फिल्मों के प्रदर्शन भी किये गए। प्रतिदिन बड़ी तादात में पुस्तक-प्रेमियों के पहुँचने वाले हुजूम ने पुस्तक मेला को सफल बनाया। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की ओर से श्री रमण ने मेले में प्रतिनिधित्व किया।

कुरुक्षेत्र में शिक्षा शिविर

जनजातीय एवं ग्रामीण अंचलों के स्कूलों में विशेष रूप में पुस्तक एवं पठन प्रोन्नयन के प्रयास के एक भाग के रूप में, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की कड़ी में, 6 मई, 2014 को कुरुक्षेत्र, हरियाणा में भी बच्चों के लिए 'शिक्षा शिविर' नाम से एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कुरुक्षेत्र के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल, खरिंदवा में आयोजित इस शिक्षा शिविर में छठी से नवीं कक्षा तक के लगभग 250 छात्रों ने भाग लिया। इन छात्रों ने यहाँ चित्र बनाने, सृजनात्मक लेखन एवं वक्तृत्वकला आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

उद्घाटन-अवसर पर जिला प्राथमिक शिक्षा अधिकारी, डॉ. अशोक ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के ऐसे प्रयासों की सराहना की तथा कहा कि इस प्रखंड में अपनी तरह का यह पहला कार्यक्रम है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि न्यास प्रत्येक वर्ष ऐसे कार्यक्रम का आयोजन करेगा। इस अवसर पर अन्य वक्ता थे–सुश्री नमिता कौशिक, उप जिला शिक्षा अधिकारी; श्री सतनाम सिंह, उप जिला शिक्षा अधिकारी; श्रीमती इंदु कौशिक, प्रधानाचार्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल; श्री राजीव रंजन, लेखक एवं श्री रणधीर, प्राथमिक शिक्षा प्रमुख।

कार्यक्रम में सभी अतिथियों एवं बच्चों का स्वागत किया गया तथा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिये गए। रा.पु. न्यास द्वारा स्कूल के पुस्तकालय को पुस्तकें दान की गईं।

शिक्षा शिविर का समन्वय रा.पु. न्यास के श्री सुनील खोखर एवं श्रीमती सुनीता नरोत्रा द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से प्रकाशित कुछ नवीनतम पुस्तकें : एक परिचय

विज्ञान और प्रौद्योगिकी का मानव जाति पर प्रभाव

के.वी. गोपालकृष्णन

अनु. : विनीता सिंघल पृ. 150 ₹ 130

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में हुई प्रगति ने न केवल हमारे जीवन, कार्यप्रणाली, यात्रा और संचार के तरीकों को ही प्रभावित किया है, बल्कि चमत्कारिक रूप से आर्थिक और सामाजिक संरचना, मानवीय प्रवृत्ति, स्वास्थ्य, राजनीति, और अन्य के साथ-साथ विश्वास तंत्र को भी प्रभावित किया है। जहाँ इससे हमें अनगिनत तरीकों से लाभ हुआ है, वहीं यह अपने साथ नई चुनौतियाँ भी लाई है। वैज्ञानिक क्रांति के इतिहास और विकास पर नजर डालते हुए, पुस्तक न केवल मानव पर इसके प्रभाव की चर्चा करती है, बल्कि इसकी जागरूकता से आई समस्याओं और आशाओं की भी चर्चा करती है। ISBN 978-81-237-7073-4

उषाकिरण खान : संकलित कहानियाँ

पृ. 152 ₹ 135

हिंदी और मैथिली भाषा में समान रूप से लेखन करने वाली लेखिका का नारी संवदेना से गहरा लगाव उनकी स्त्री-प्रधान कहानियों में परिलक्षित होता है। केवल समृद्ध वर्ग ही नहीं बल्कि समाज के हाशिये पर, निचली सतहों पर जीवनयापन करने वाले वर्ग की गहराई में जाकर पारिवारिक रिश्तों की असंगतियाँ, सामाजिक विसंगतियाँ और सामाजिक दोगलापन, धर्मभेद, तथा लिंगभेद से जुड़ी समस्याओं और मानवीय अंतर्संबंधों की गहरी संवेदनाओं को उन्हीं की भाषा में रेखांकित करती ये कहानियाँ पाठकों को भीतर तक झकझोरती हैं। लेखिका मिथिला-निवासी हैं और गाँव से जुड़ी हैं, इसलिए उनकी अधिकतर कहानियों की पृष्ठभूमि में गाँव की माटी की सुगंध व्याप्त है और भाषा पर मैथिली भाषा का प्रभाव। ये कहानियाँ व्यापक रूप से मिथिला के देहाती परिदृश्य का उद्घाटन करती हैं जिसमें स्त्री के करुणा और संघर्ष भरे जीवन की बयानी, भावनाओं का अछूतापन अथवा अनकहे प्रेम का खिंचाव, सबको लेखिका ने गहराई से पाठकों के समक्ष सधी हुई रचनात्मक भाषा में व्यक्त किया है। गाँव की परिधि से बाहर निकली कहानियाँ भी अपनी जड़ों को मजबूती से थामे रहती हैं। ISBN 978-81-237-7118-2

बूँद बावड़ी

पद्मा सचदेव पृ. 225 ₹ 400

'बूँद बावड़ी' पद्मा सचदेव की जिंदगी का एक अभिन्न हिस्सा है। पद्मा जी स्वयं कहती है—मैंने जिंदगी का हर लम्हा पूरी तरह भीगकर जीने की कोशिश की है। इस पड़ाव पर आकर अगर घूमकर पीछे देखूँ तो वो सभी चेहरे याद आते हैं जिन्होंने अपने स्नेह की बौछार में सराबोर करके आगे कदम उठाने की हिम्मत दी है। मिलने की घड़ियाँ और विदा होने के पल दोनों ही भरी हुई बावड़ी की तरह उछल-उछलकर मेरी जिंदगी को भिगोते रहते हैं—आज किसी भी बात का पछतावा नहीं है... ISBN 978-81-237-7137-3

गोंड : उत्पत्ति, इतिहास तथा संस्कृति

अनुराधा पॉल

अनु. : ए.के. गाँधी पृ. 152 ₹ 155

गोंड भारत का सबसे बड़ा आदिवासी समुदाय है। मूल रूप से मध्य भारत के आंचलिक क्षेत्रों में निवास करने वाला यह देशज समुदाय स्वयं को द्रविड़-धारा का सृजन मानता है। गोंडी गुरु, पारि कूपार लिंगों के उपदेशों पर आधारित यह पुस्तक गोंडी की उत्पत्ति, इतिहास, संस्कृति, दर्शन और मान्यताओं पर विवेचना प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक समाजविज्ञानियों, नृशास्त्रियों, सांस्कृतिक अध्ययन करने वाले छात्रों के साथ-साथ आम पाठकों के लिए भी बेहद उपयोगी है।

ISBN 978-81-237-7142-7

रत्न मीमांसा : वैज्ञानिक-परावैज्ञानिक आयाम

इ. नमोनाथ पृ. 278 ₹ 325

रत्नों का अपार संसार, प्रकृति की वह अनुपम देन है, जो भौतिक और पराभौतिक गुणों से पूर्ण, तथ्य और कल्पना का संगम, ब्रह्म और माया द्वैत स्वरूप, एवं शृंगार का मिश्रण तथा अंधविश्वास एवं यथार्थ का नायाब उदाहरण है। यह कवि द्वारा प्रशंसित, वैज्ञानिक द्वारा अध्ययनीत, कलाकार द्वारा चित्रित, सुंदरी द्वारा धारित संपत्ति और सामर्थ्य का प्रतीक, खनिकों के कठिन श्रम का फल तथा शिल्पियों की कलाकारी का विस्मयकारी स्वरूप है। रत्नों के पराभौतिक गुणों का बखान करने वाले अनेक प्राचीन ग्रंथ हैं, परंतु उन ग्रंथों में भौतिकी और वैज्ञानिकी पहलुओं पर पाश्चात्य देशों में अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं, लेकिन उसमें पराभौतिक पक्ष बिलकुल नगण्य है। वैज्ञानिक ज्ञान और वर्षों के अनुभव के आधार पर लिखी गई यह पुस्तक अपने-आप में एक अनूठा प्रयास है, जहाँ रत्नों की उत्पत्ति, प्रसंस्करण और उपयोग के वैज्ञानिक एवं परावैज्ञानिक पक्ष का अद्भुत संश्लेषणात्मक और विश्लेषणात्मक समन्वय है। ISBN 978-81-237-7100-7

डॉ. राम मनोहर लोहिया

संचयन एवं संपादन : गुंजेश्वरी प्रसाद पृ. 198 ₹ 170

डॉ. राम मनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च, 1910 को उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जनपद में (वर्तमान आंबेडकर नगर, जनपद) अकबरपुर नामक स्थान में हुआ था। उनके पिता जी गाँधी जी के अनुयायी थे। इसके कारण गाँधी जी के विराट व्यक्तित्व का असर उन पर भी पड़ा। 1918 में अहमदाबाद काँग्रेस अधिवेशन में पहली बार शामिल हुए। 10 वर्ष की आयु में स्कूल त्याग किया। 1923 में मैट्रिक की परीक्षा दी। कॉलेज के दिनों से खद्दर पहनना शुरू कर दिया। 9 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। कई बार जेल भी गए। देश के कई संग्राम में वे आगे रहे। मात्र 75 वर्ष की उम्र में पौरुष ग्रंथि के ऑपरेशन के समय उनका देहांत हो गया। लोहिया जी ने अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों की रचना की।

ISBN 978-81-237-7127-4

कवि का कहा

मिथिलेश श्रीवास्तव पृ. 96 ₹ 95

प्रस्तुत पुस्तक में अपने समय के तीन बड़े कवियों क्रमशः रघुवीर सहाय, केदारनाथ सिंह और मंगलेश डबराल के साक्षात्कार हैं। तीनों कवि समकालीन हैं और एक समय में एक साथ काम करते हैं। तीनों कवियों ने हिंदी भाषा को पारस पत्थर की भाँति छुआ और उसे नई संवेदना का वाहक बनाया।

ISBN 978-81-237-7125-0

मीडिया लाइव

रत्नेश्वर के सिंह पृ. 232 ₹ 225

आज का समय मीडिया प्रधान समय है। मीडिया की महत्ता सर्वविदित है। मीडिया जाने-अनजाने हमारे जीवन का एक हिस्सा-सा बन गया है। ऐसे में मीडिया पर प्रामाणिक जानकारी से युक्त यह पुस्तक पाठकों के लिए बेहद उपयोगी बन पड़ी है। इसमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सफर, टेलीविजन लाइव, रेडियो लाइव, पत्रकारिता एवं लेखन, टेलीविजन स्क्रिप्ट, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की तकनीक, टेलीविजन प्रस्तुति, वेब मीडिया का इतिहास और विकास आदि विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है। यथा आवश्यक छायाचित्रों के उपयोग से पुस्तक और भी प्रभावशाली बन गई है। मीडिया क्षेत्र में जाने वाले नवागंतुकों के अलावा मीडिया के अध्येताओं के लिए भी एक उपयोगी पुस्तक। ISBN 978-81-237-7056-7

चेन्नई में पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

पाँच दिवसीय अध्यावधि के पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का चेन्नई के सिनॉड हॉल में 21 से 25 अप्रैल, 2014 तक आयोजन किया गया। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत में तमिल भाषा के संपादक श्री टी. मदनराज ने इस पाठ्यक्रम के उद्घाटन-सत्र में उपस्थित अतिथियों-आगंतुकों का स्वागत किया। पाठ्यक्रम के समापन-सत्र में न्यास की (तत्कालीन) संयुक्त निदेशक (प्रशा. एवं वित्त) श्रीमती फरीदा एम. नाईक उपस्थित थीं तथा उन्होंने छात्रों को प्रमाणपत्र प्रदान किया।

चेन्नई पुस्तक मेला के एक भाग के रूप में आयोजित इस पाठ्यक्रम में प्रकाशन के विभिन्न महत्वपूर्ण विभागों, क्षेत्रों पर प्रकाश डाला गया। इसके अंतर्गत प्रकाशन के इतिहास एवं उद्योग के संबंध में सामान्य जानकारी, पांडुलिपि की प्राप्ति एवं उसका संपादन, बच्चों के लिए पुस्तकें, उत्पादन एवं मुद्रण, विपणन एवं प्रतिलिप्यधिकार प्रबंधन आदि शामिल थे। पाठ्यक्रम के विशेषज्ञों में थे–श्रीधर बालन, डॉ. ए.आर. वेंकटचेलापति, रामकृष्णन, राधिका मेनन, शोभा विश्वनाथ, ओलिवन्नन, रमेश, प्रो. अवस्थी, मिनी कृष्णन एवं श्री सत्यनारायन। साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त श्री जो डी'क्रूज ने श्रोताओं से अपने अनुभव एवं ज्ञान साझा किया।

इस पाँच दिवसीय पाठ्यक्रम में विभिन्न कॉलेजों के लगभग 50 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें छात्र, प्रकाशक एवं शिक्षक शामिल थे।

प्रशिक्षित व्यावसायिकों की माँग को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने दिल्ली के साथ-साथ देश के अन्य भागों में भी पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन किया। इसमें क्षेत्रीय भाषा प्रकाशन की आवश्यकता को भी ध्यान में रखा गया। प्रतिभागियों को प्रकाशन गृह, पुस्तकालय एवं प्रिंटिंग प्रेस ले जाकर दिखाने की भी व्यवस्था की गई थी जिससे प्रतिभागियों को प्रकाशन क्षेत्र के व्यावसायिक पक्ष को भी जानने-समझने का अवसर मिला।

विदित हो कि न्यास कलकत्ता यूनिवर्सिटी तथा आंबेडकर यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर भी प्रकाशन में पीजी डिप्लोमा कोर्स का आयोजन करता है। अपने लक्ष्य को और विस्तार देते हुए न्यास जल्द ही मद्रास यूनिवर्सिटी के साथ भी ऐसे ही पाठ्यक्रम के आयोजन की तैयारी कर रहा है।

न्यास में अँग्रेजी संपादक श्री बिन्नी कूरियन ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

कन्याकुमारी में हिंदी सम्मेलन एवं कार्यशाला

भारत सरकार के राजभाषा संबंधी आदेशों/निर्देशों का अनुपालन करते हुए सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने तथा सरकारी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा संबंधी नियमों एवं विनियमों आदि के साथ-साथ कंप्यूटर के क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग के बारे में विस्तृत जानकारी देने के उद्देश्य से राजभाषा एवं प्रबंधन विकास संस्था, दिल्ली द्वारा 21 से 23 मई, 2014 तक कन्याकुमारी में 26वें हिंदी सम्मेलन एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से हिंदी संपादक व राजभाषा अधिकारी, श्रीमती उमा बंसल तथा वरिष्ठ आशुलिपिक, श्री सुभाष चंद्र ने भाग लिया। इस सम्मेलन व कार्यशाला में देश भर के विभिन्न सरकारी कार्यालयों से 50 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

संस्था की ओर से हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत को शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

गोवा में प्रयोजनमूलक राजभाषा कार्यशाला

राजभाषा संबंधी विभिन्न उपबंधों, राजभाषा नीति की अद्यतन स्थिति, राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समस्याएँ एवं समाधान, राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण आदि विषयों से अवगत कराने तथा इन विषयों पर विशेष चर्चा के उद्देश्य से इंस्टिट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, बेंगलुरु द्वारा गोवा में 19 एवं 20 मई, 2014 को 'दो दिवसीय प्रयोजनमूलक राजभाषा कार्यशाला' आयोजित की गई। इस कार्यशाला में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से संपादकीय सहायक, श्रीमती कंचन वांचू शर्मा व कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, सुश्री अल्पना भसीन ने भाग लिया। इस सम्मेलन व कार्यशाला में देश भर के विभिन्न सरकारी कार्यालयों यथा रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया, ओएनजीसी, आईडीबीआई आदि से लगभग 50 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

पुस्तक परिचय

यह हमारा समय (निबंध)
नंद चतुर्वेदी; पृ. 160 ₹ 300
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
एक वरिष्ठ रचनाकार के निबंधों का संग्रह। निबंधों का विषय क्षेत्र विस्तार दूर तक है। स्त्री, शिक्षा, दलित, धर्म, बाजारवाद, हिंदी, पत्रकारिता, संचार-साधन, युवा पीढ़ी, भारतीयता, कविता और पानी तक पर लेखक ने कलम चलाई है। अपने समय और समाज पर लेखक की सुचिंतित टिप्पणी।

मीठी नीम (उपन्यास)
कुसुम कुमार; पृ. 404 ₹ 550
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
एक मर्मस्पर्शी रचना, रोचक और प्रेरक भी, साथ ही विचारोत्तेजक। मूल विषय पर्यावरण को केंद्र में रखकर लिखा गया है, किंतु लेखकीय कौशल से यह हमारे बाहर और भीतर, दोनों प्रकार के पर्यावरण का आद्यांत विवरण बन जाता है। उपन्यास की नायिका है, ओमना।

कहानियाँ सुनाती यात्राएँ
कुसुम खेमानी; पृ. 192 ₹ 400
राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., 7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
यहाँ यात्राओं में कहानी है और कहानी में यात्राएँ। या फिर यात्रा में संस्मरण हैं और किस्सागो शैली में कहानी भी। निबंध जैसा भी कुछ। यानी इंद्रधनुषी लेखन का जायका है यहाँ। यात्राएँ भूगोल की, और आभ्यंतर की भी। देश और विदेश के अनेक स्थलों की यात्राएँ, फिर यात्रा के भीतर यात्राएँ...।

ठहरा हुआ सच (कहानी संग्रह)
निरुपमा; पृ. 96 ₹ 300
जूली पब्लिकेशंस, पी-137, पिलंजी, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली-23
ग्यारह कहानियों का संग्रह, कहानी के क्षेत्र में लेखिका का पहला प्रयास। मूल रूप से कविताएँ लिखती हैं। कहानियों के पात्र और परिवेश गाँव के भी हैं और शहर के भी। भाषा सहज, सरल और बोधगम्य है। अपनी बात कह देनी है ऐसा सोचकर जो लिखा वही कहानियाँ बन गया।

तुम हो तो... (कविता संग्रह)
प्रतिमा अखिलेश; पृ. 88 ₹ 100
पाथेय प्रकाशन, 112, सराफा वार्ड, जबलपुर
कुल 47 कविताएँ–छंदमुक्त भी और छंदयुक्त भी। विषय का विस्तार दूर तक, अनेक क्षेत्रों में। कविताओं में आंतरिक अनुभूतियाँ हैं, प्रेम है, समर्पण है, वात्सल्य है; संदेश और सलाह भी। सामाजिक समस्याओं पर भी लेखनी चलाई गई है।

मेरी आवाज सुनो (कविता संग्रह)
सतीश वर्मा; पृ. 96 ₹ 200
साहित्यागार, 958, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर
बिना किसी लाभ, लोभ या डर, बंदिश के जब कविताएँ निःसृत होती हैं तो वो ऐसी ही होती हैं जैसी सतीश वर्मा के कलम से निकली हैं। एक अलग ही भाव-भंगिमा और तेवर की कविताएँ हैं ये, जहाँ शब्दों का सुंदर चमत्कार है।

...क्या कहूँ, क्या ना कहूँ (उपन्यास)
शीला इन्द्र; पृ. 288 ₹ 460
कल्याणी शिक्षा परिषद्, 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-02
वरिष्ठ लेखिका का संस्मरणात्मक उपन्यास। उमर के आठ दशक देख लेने पर भी लेखिका की याददाश्त जबरदस्त है। घर-परिवार की स्त्रियों के दुख, सुख, आँसू, पीड़ा, दर्द और वेदना को पिरोया गया है शब्दों की लड़ी में। इसे पढ़कर लगेगा–घर-घर देखा, एक्के लेखा।

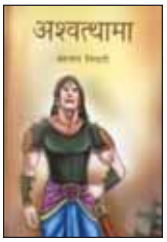

अश्वत्थामा (उपन्यास)
प्रहलाद तिवारी; पृ. 216 ₹ 350
इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, के-71, कृष्णा नगर, दिल्ली-51
महाभारत के पात्रों और घटनाओं पर कथा-लेखन की नई शृंखला के क्रम में लेखक का तीसरा उपन्यास (कुल 15वाँ उपन्यास)। उपन्यासकार ने अश्वत्थामा के मिथक के माध्यम से दृष्टिहीनता और समकालीन मनुष्य की अमानुषिकता को उभारा है।

शुक्रिया जिंदगी (ग़ज़ल संग्रह)
श्याम सखा 'श्याम'
पृ. 96 ₹ 200
हिंद-युग्म, 1, जियासराय, हौजखास, नई दिल्ली-16
श्याम जी के इस नए संग्रह में भी उनकी पहली ग़ज़ल पुस्तक के समान ताजगी है, रवानगी है। जीवन की सचाइयों को दो पंक्तियों में कह देना बड़ा ही मुश्किल काम है। ग़ज़लकार ने यहाँ बड़ी खूबी से ज़िंदगी को शुक्रिया कहा है और अच्छी-अच्छी ग़ज़लें पाठकों को दी हैं।

आज का रावण (उपन्यास)
ए. के. सिंह; पृ. 120 ₹ 200
गगन स्वर बुक्स, ए-17 बी, उत्तरी छज्जूपुर, शाहदरा, दिल्ली-32
सत्य घटना पर आधारित उपन्यास। एक डाकू ने अपहृत की पत्नी के मनुहार से पसीजकर उसे छोड़ दिया, उस स्त्री को बहन भी माना। उपन्यास का विस्तार इस कथा से इतर अन्य सामाजिक समस्याओं तक है।

ऐतबार (ग़ज़ल संग्रह)
संपा. : अपर्णा चतुर्वेदी प्रीता
पृ. 122 ₹ 275
प्रीता प्रकाशन, ए-511, सिद्धार्थ नगर, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302017
नई-पुरानी पीढ़ी के अनेक ग़ज़लकारों के ग़ज़लों का संग्रह। इस संग्रह की विशेषता है कि तमाम ग़ज़लों को इश्क मुहब्बत की नज़र से लिखा गया है। ये सब रिवायती ग़ज़लें हैं।

खड़सिंगी (कहानी संग्रह)
सुरेन्द्र प्रसाद यादव; पृ. 128 ₹ 150
निराली दुनिया पब्लिकेशंस, 358-ए, बाजार देहली गेट, दरियागंज, नई दिल्ली-02
लगभग तीस कहानियाँ। सहज, सरल। आभिजात्य के आतंक से मुक्त ठेठ देहाती कहानियाँ। कहानियों में आंचलिकता है सो इसलिए 'देहाती'। आजकल कहानियों से भदेसपन गायब हो रहा है, पर यहाँ है, सो रुचता है।

प्रतिलिप्यधिकार पर संगोष्ठी

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा विश्व पुस्तक एवं प्रतिलिप्यधिकार दिवस के अवसर पर 23 अप्रैल, 2014 को कोलकाता में 'प्रतिलिप्यधिकार व पाइरेसी' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस संगोष्ठी में कलकत्ता विश्वविद्यालय के पुस्तक प्रकाशन अध्ययन केंद्र से आए वक्ताओं, ऑल्टरनेटिव लॉ फोरम, बेंगलुरु से आए एक वकील तथा दिल्ली व कोलकाता से आए अनेक प्रकाशकों ने अपने विचार साझा किए।

सत्र की शुरुआत में दिल्ली विश्वविद्यालय पर चल रहे 'फोटोकॉपी मुकदमे' पर चर्चा की गई जिसमें ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, टेलर एंड फ्रांसिस तथा रूटलेज द्वारा अनधिकृत रूप से फोटोकॉपी करने तथा पाठ्यक्रम सामग्री के अनधिकृत वितरण के आरोप में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा रमेश्वरी फोटोकॉपी सर्विस पर प्रतिलिप्यधिकार उल्लंघन का मुकदमा किया गया था।

''फोटोकॉपी लोगों को उन पुस्तकों तक पहुँचाने का कार्य करती है जो बाजार में आसानी से उपलब्ध नहीं हैं, अप्राप्य हैं तथा जिनकी कीमत बहुत अधिक है। फोटोकॉपी पाठकों के बीच पुस्तकों को लोकप्रिय बनाने तथा विद्यार्थियों में पुस्तकों के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रही है।'' ऑल्टरनेटिव लॉ फोरम की सुश्री स्मारिका कुमार ने कहा।

जिस प्रकार विद्यार्थी फोटोकॉपी करने वाले के विरुद्ध लगे मुकदमे का विरोध कर रहे हैं उसी प्रकार स्मारिका कुमार ने इसे पाइरेसी का मामला न बताकर, प्रकाशकों का भय अधिक माना।

पाइरेसी के पनपने का कारण पुस्तकों की बढ़ती कीमतें हैं, इस पर बहस को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, ''यह एक मिथक है कि पुस्तकों का भारतीय संस्करण सस्ता होता है। नेलसन मंडेला की 'लॉन्ग वाक टू फ्रीडम' पुस्तक की कीमत भारत में अमेरिका से अधिक है।''

उन्होंने यह बताया कि भारतीय अपनी आय का अधिकतर भाग पुस्तकों पर खर्च करते हैं। साथ ही, यह भी बताया कि 19वीं सदी में किस प्रकार पाइरेसी ने अमेरिका में साक्षरता का प्रसार किया। उन्होंने बताया कि ''यूनाइटेड किंग्डम में 19वीं सदी में चार्ल्स डिकेंस की पुस्तक 'ए क्रिसमस कैरल' की कीमत 2.5 पाउंड थी जबकि इसी पुस्तक की कीमत संयुक्त राज्य अमेरिका में 6 सेंट थी। अमेरिका ने बड़े पैमाने पर पुस्तकों की पाइरेसी की है क्योंकि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उस समय कॉपीराइट का बोलबाला नहीं था। अमेरिका कॉपीराइट पुस्तकों का सबसे बड़ा पाइरेट था।

जब सेंट्रल बुक एजेंसी के अमिताभ सेन ने कहा कि कॉपीराइट तथा पाइरेसी विरोधी कानून 'लेखकों तथा प्रकाशकों दोनों के अधिकारों को सुरक्षित करते हैं' तो कुमार ने इस बात पर कहा कि पाइरेसी ने वास्तव में कानूनी बिक्री को समाप्त कर दिया है।

इस संबंध में योदा प्रेस की अर्पिता दास ने पाउलो कोल्हो, जिनकी फ्री डिजिटल कॉपी ने रूस में बिक्री को 1 मिलियन तक बढ़ा दिया, के बारे में बताते हुए कहा, ''इस मुफ्त डाउनलोड के युग में हम प्रकाशकों को आसपास हो रहे परिवर्तनों को समझना पड़ता है। अब हम उतने रक्षावादी नहीं रह सकते, जितने पहले हुआ करते थे।''

प्रकाशन के क्षेत्र में स्वतंत्रता की बात करते हुए रा.पु. न्यास, भारत के पूर्व निदेशक, श्री निर्मल कांति भट्टाचार्जी ने बौद्धिक संपदा अधिकार के संरक्षण तथा ज्ञान के प्रसार के बीच एक अच्छा संतुलन बनाने की बात कही।

साभार :'टेलीग्राफ'

सिंधी सलाहकार समिति की बैठक

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास मुख्यालय, नई दिल्ली में 26 मई, 2014 को नवगठित सिंधी भाषा सलाहकार समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में उपस्थित सदस्यगण थे–डॉ रवि प्रकाश टेकचंदाणी, श्री किशन रतनानी, प्रो. एम.के. जेतली (तीनों दिल्ली से), डॉ. मनोहरलाल बी. मतलाणी (मुंबई), डॉ. हासो दादलाणी (अजमेर), श्री ज्ञाप्रटे 'सरल' (ज्ञान प्रकाश टेकचंदानी 'सरल') (फैजाबाद) एवं डॉ. के.पी. लेखवाणी (पुणे)। न्यास की ओर से निदेशक डॉ. एम.ए. सिकंदर एवं हिंदी संपादक श्री दीपक कुमार गुप्ता उपस्थित थे।

बैठक में कुछ मूल सिंधी पुस्तकों के प्रस्ताव स्वीकार किये गए, साथ ही न्यास से प्रकाशित कुछ पुस्तकों के सिंधी अनुवाद को भी स्वीकृति मिली।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/5/2014

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास पुस्तक विक्रय केंद्र सह पुस्तक प्रोन्नयन केंद्र

चेन्नई
भूतल, ईवीके संपत बिल्डिंग
डीपीआई कॉम्प्लेक्स, कॉलेज रोड, नुन्गामपक्कम
चेन्नई-600006

हैदराबाद
आंध्र महिला सभा, महिला सभा बिल्डिंग
यूनिवर्सिटी रोड, हैदराबाद-500044

गुवाहाटी
असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति बिल्डिंग
डैग नं. 531, जीएमसी वार्ड नं. 45
हेदायतपुर, मौजा, उलुबारी, गुवाहाटी-781033

अगरतला
लाइब्रेरी (पुराग्रंथागार) अगरतला
एएमसी का भूतल, अगरतला

पटना
73/40 ऑफिसर्स फ्लैट, बेली रोड
पटना

दिल्ली में एन.बी.टी. का अन्य पुस्तक विक्रय केंद्र

4/5 बी, आसफ अली रोड (निकट डिलाइट सिनेमा)
नई दिल्ली-110 002

गृह कैडर में वापसी

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में अगस्त 2010 में प्रतिनियुक्ति पर पदस्थापित संयुक्त निदेशक (प्रशा. एवं वित्त) **श्रीमती फरीदा एम. नाईक** 8 मई, 2014 को न्यास से मुक्त होकर अपने गृह कैडर सीएस-1 डिविजन, डीओपीटी में वापस चली गईं। 8 मई को न्यास-सभागार में विदाई समारोह के दौरान न्यास के सहकर्मियों ने उन्हें विदाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक :उमा बंसल।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070